चौठचन्द्र पूजा पद्धति

(मैथिली टीका)

संपादक:
पं० श्री इन्द्रकान्त झा "व्याकरणाचार्य"
रहिका, मधुबनी

उर्वशी प्रकाशन,
13/एम० आई० जी०, कॉलोनी, हनुमाननगर कंकड़बाग, पटना-20

चौठचन्द्र पूजा पद्धति

सम्पादक
पं० गोपीकान्त झा
रहिका, मधुबनी

M.Katyayana

उर्वशी प्रकाशन
पटना-२०

मूल्य : ५.००

प्रस्तावना

ई पावनि भादव शुक्ल चौठ तिथिमे होइत अछि । एहि पावनिक प्रचार-प्रसार मिथिलेटामे अछि । अन्यत्र लोक एहि तिथिमे चन्द्रमाके कलंकित बूझि ढेप-पाथर फेकैत अछि ।

मिथिला नरेश हेमाङ्गद ठाकुर द्वारा ई पावनि कएल गेल । एहि तिथिकेँ हुनका कोनो विशेष शुभ फल प्राप्त भेलनि तैं ओ अपनहुँ कएल आ एकर प्रचार-प्रसारो कएलनि । ओ स्वयं नीक ज्योतिषी छलाह। हुनक प्रसिद्ध कृति अछि 'ग्रहणमाला' । ई पावनि हुनकहि समय सँ मिथिलामे प्रचलित भेल आ अद्यपर्यन्त लोक शुभ फल प्राप्तिक लालशा सँ करैत अछि ।

ई व्रत लोक मनोकामना सिद्धि भेला पर वा सिद्धिक उद्देश्यें दिन भरि निराहार रहि साँझमे विविध प्रकारक पूड़ी-पकवान, नव माटिक बासनमे पौड़ल दही आ सामयिक फल, मेवा सँ युक्त भऽ चन्द्रमाकेँ देखि हाथ उठबैत छथि । स्कन्धपुराणक आधार पर एकर पूजा आ कथा निर्दिष्ट अछि ।

पर्वनिर्णयक अनुसार ई चतुर्थी संध्याकाल जाहि दिन पड़ैतैक ओही दिन होयत । एही तिथिकेँ सिद्धिविनायक गणेशजीक पूजा सेहो प्रशस्त अछि ।

श्री गोपीकान्त झा

चौठचन्द्र पूजा पद्धति

निर्णय :–ई चतुर्थी मध्याह्न व्यापिनी होइछ । अगर दू दिन संध्या समयमे पड़त त' पूर्व दिनमे हेबाक चाही । ई तृतीया विद्धा चौठ प्रशस्त मानल गेल अछि ।

पूजा

सायंकाल व्रती नित्यकर्म सँ निवृत्त भऽ स्नान कय पूजा आसन पर बैसथि । तखन यावन्तो पूजाक सामग्रीकेँ अरिपनक अनुसार डाली आ छाँछीकेँ अरिपन पर राखथि । बीचमे जे अष्टदल अरिपन ताहि पर पायस (मड़र) राखथि । कलशक जे अरिपन ताहि पर दीपयुक्त कलश राखथि । तखन हाथमे कुशक पवित्री धारण कए तेकुशा आ जल लऽ निम्न मन्त्र पढ़ि पूजाक यावन्तो सामग्रीकेँ शिक्त कऽ अपन शरीरकेँ शिक्त करथि ।

मन्त्र– नमः अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोपिवा ।
य: स्मरेत पण्डरीकाक्ष सवाह्याभ्यन्तर सूचिः सूचिः ॥
नमः पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॥

पंचदेवता पूजा :–हाथमे अक्षत लऽ पूजाक लेल' जे अरिपन पर पात राखल अछि ताहि पर– **'नमः गणपत्यादि पंचदेवता इहागच्छ इहतिष्ठत'** । कहि हाथक अक्षत पर राखि अर्चामे

जल लऽ–'एतानि पाद्यार्घाचमनीय स्नानीय पुनराचमनीय नमः गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः । चानन–इदमनु लेपनं गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः । लाल चानन–इदं रक्तचंदनं गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः । अक्षत–इदमक्षतं गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः । फूल–एतानि पुष्पाणि गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः । दूबि–इदं दुर्वादलं गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः । तहन अर्घामे जल लऽ–एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप ताम्बूल यथाभाग नानाविधि नैवेद्यानि गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः । पुनः जल लऽ–इदंमाचमनीय नमः गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः । एकटा फूल लऽ–एष पुष्पांजलि गणपत्यादि पंचदेवताभ्यो नमः ।

विष्णु पूजा (विधवा स्त्री)–तेकुशा तिल-जल लऽ–''नमः भूर्भूवः स्वः भगवन् श्री विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठत ।'' कहि हाथक तील-जौ पूजाक पात पर दोसर ठाम राखि अर्घामे जल लऽ–''एतानि पाद्यार्घाचमनीय स्नानीय पुनराचमनीय नमः भगवान् श्री विष्णवे नमः। चानन–''इदमनु लेपनम् नमः भगवन् श्री विष्णवे नमः ।'' तखन तिल-जौ–''एते यव-तिला नमः भगवन् श्री विष्णवे नमः ।'' फूल–''एतानि पुष्पानि नमः भगवन् श्री विष्णवे नमः ।'' तुलसी पात–''एतानि तुलसी सुपत्राणि नमः भगवन् श्री विष्णवे नमः ।'' तहन

जल लऽ–"एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप ताम्बूल यथाभाग नानाविधि नैवेद्यानि नमः भगवन् श्री विष्णवे नमः।" पुनः जल लऽ–"इदमाचमनीय भगवन् श्री विष्णवे नमः।" एकटा फूल लऽ–"एष पुष्पाञ्जलि नमः भगवन् श्री विष्णवे नमः।"

गौरी पूजा (सधवा स्त्री) अक्षत लऽ–"नमः श्री गौड़ी इहागच्छ इहतिष्ठत।"। पात पर राखि जल लऽ–"एतानि पाद्यार्घाचमनीय स्नानीय पुनराचमनीय नमः श्री गौर्यै नमः।" चानन–"इदमनु लेपनं नमः श्री गौर्यै नमः।" सिन्दूर–"इदं सिंदुराभरणं नमः श्री गौर्यै नमः।" अक्षत–"इदमक्षतं नमः श्री गौर्यै नमः।" फूल–"एतानि पुष्पाणि नमः श्री गौर्यै नमः।" वेलपत्र–"इदं विल्वपत्रं नमः श्री गौर्यै नमः।" जल लऽ–"एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप ताम्बूल यथाभाग नाना विधि नैवेद्यानि नमः श्री गौर्यै नमः।" जल लऽ–"इदमाचमनीय नमः श्री गौर्यै नमः।" एकटा फूल–"एष पुष्पाञ्जलि नमः श्री गौर्यै नमः।"

संकल्प

हाथमे कुश तिल जल किछु द्रव्य (सवा टाका) कम-सँ-कम लऽ–"नमोऽस्यां रात्रौ भाद्रे मासि शुक्ले पक्षे तचुर्थ्यां तिथौ, अमुक गोत्राया अमुकी देव्याः पूर्वाङीकृतसकलाभीष्ठ मनोरथ सिद्ध्यर्थं रोहिणी सहित भाद्र चतुर्थी चन्द्र पूजन तत्कथा श्रवण संकल्प महं करिष्ये।

चौठी चानक पूजा

हाथमे अक्षत लऽ चन्द्रमाक जे अरिपन ताहि पर जे चिकनी (भेँटक) पात राखल ताहि पर–"नमः रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठेत्यावाह्य ।" तखन शंखमे दूध-फूल-चानन दऽ अर्घ सँ–"नमो दिव्यशंखतुषाराभं क्षीरो दार्णव सम्भव । गृहाणार्घ शशांकेमं रोहिण्या सहित प्रभो । क्षीरो दार्णव संभूत चन्द्रलक्ष्मी सहोदरा । पीयूषधाम रोहिण्या सहितोऽर्घ गृहाणमे ।" पुनः अर्घामे जल लऽ–"एतानि पाद्यार्घाचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि नमो रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्राय नमः ।" दुग्ध सँ–नमः सोहाय सोमेश्वराय सोमपतये सोम संभवाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ इदं क्षीरस्नानं रोहिणी सहित चतुर्थी चन्द्राय नमः । चानन–"इदमनुलेपनम् रोहिणी सहित चतुर्थी चन्द्राय नमः ।" रक्त चानन–"इदम् रक्तानुलेपनम् नमो रोहिणी सहित चतुर्थी चन्द्राय नमः । अक्षत–"इदमक्षतं भाद्र शुक्ल रोहिणी सहित चतुर्थी चन्द्राय नमः ।" श्वेत फूल–"इदं पुष्पम् रोहिणी सहित चतुर्थी चन्द्राय नमः ।" जनउ–"इमे यज्ञोपवीते वृहस्पति दैवते नमः रोहिणी भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्राय नमः ।" वस्त्र–"इदं श्वेत वस्त्रं वृहस्पति दैवतम् रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्राय

नमः । दूबि–इदं दुर्वादलम् नमः भाद्र शुक्ल रोहिणी सहित चतुर्थी चन्द्राय नमः ॥ विल्वपत्र–एतानि विल्वपत्राणि नमः भाद्र शुक्ल रोहिणी सहित चतुर्थी चन्द्राय नमः । जल लऽ–एतानि गन्ध-पुष्प धूप-दीप ताम्बूल नानाविधि नैवेद्यानि नमः रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्राय नमः । जल लऽ–इदमाचमनीयम् नमः रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्राय नमः । एकटा फूल–एष पुष्पाञ्जलि नमो रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्राय नमः । अंतमे अर्घ पात्रमे--जल, फूल, चानन, अक्षत इत्यादि दए ब्रह्मणे नमः ।

तदुपरांत डाली सभके एका-एकी हाथमे लऽ निम्न मंत्र पढ़ि-पढ़ि हाथ उठाबी–

नमः सिंहप्रसेन मवधीत्सिंहो जाम्बववता हतः ।
सुकुमारक मा रोदीः तवह्येषः स्यमन्तकः ॥

एहि मंत्र सँ सब अर्घ उठाबी पुनः निम्न मंत्र सँ दहीक छाँछी उठाबी–

नमो दिब्य शंख तुषाराभं क्षारोदार्णव सम्भवः ।
नमामि शशिनं भक्त्या शंभोर्मुकुट भूषणम् ॥

सब अर्घ उठा तहन पूजा लगक यावन्तो सामाग्री के उत्सर्ग कऽ कथा सुनी ।

कथा

नन्दिकेश्वर योगीन्द्र एक समयमे सनत कुमार के कहलथिन जे चन्द्रमाक एहि कथाके एकाग्र चित्त सँ सुनु । ई पूजा भाद्र शुक्ल चतुर्थीक अन्तमे उत्तम थिक । जे पुरुष वा स्त्रीगण अपन कल्याण चाहैत छथि ओ एहि व्रत के करथि । ई व्रत कयलासँ सदा धनवान, पुत्रवान आ लोक प्रसन्न रहैत अछि । ई सुनला पर सनत कुमारके जिज्ञासा भेलनि आ ओ हुनका सँ प्रश्न कएलनि जे ई व्रत मृत्युलोकमे कोना आएल से हमरा कहू ।

तहन नन्दिकेश्वर कहलथिन–हे योगेन्द्र ! संसारक पालक भगवानके जहन मिथ्या कलंक लागि गेलनि त' परम चिन्ता भेलनि । तखन ओ नारदक प्रेरणा सँ गणेश तथा चन्द्रमाक पूजा कएलनि आ ताहीसँ हुनकर कलंक मेटैलनि । तहन सनत कुमार जिज्ञासा कएलखिन–"हे नन्दिकेश्वर ! सर्व सम्पन्न संसारक पालन आ संहार कएनिहार जे मर्यादा पुरुष तिनका मिथ्या कलंक कोना लगलनि से कहू !" तकर उत्तर नन्दिकेश्वर कहय लगलथिन–पृथ्वीक भार उतारक हेतु बासुदेवक पुत्रक रुपमे जहन कृष्ण आ बलराम भऽ उत्पन्न भेलाह । कंस बधक बाद कंसक ससुर जरासंधक आक्रमणक भयसँ कृष्ण समुद्रमे गुप्तसेन द्वारा निर्मित द्वारिकाक जिर्णोद्धार करौलनि । ओहि ठाम छप्पन कोटि यदुवंशी निवास करैत छलाह । सोलह हजार आठ स्त्रीगण लोकनि लेल रहबाक विशेष भवन छल।

ओहि ठामक राजाके संत्राजित आ प्रसेन नामक दू गोट बालक बड़ प्रसिद्ध भेलखिन। बुद्धिमान संत्राजित समुद्रक किनारकेँ शान्ति क्षेत्र बुझि ओतय सूर्यक तपस्या करए लगलाह। हुनका तपस्यासँ प्रसन्न भए भगवान सूर्य हुनका समक्ष एक दिन उपस्थित भेलाह। संत्राजित अपन समक्ष सूर्यके उपस्थित देखि बड़ प्रसन्न भेलाह। सूर्य हुनका कहलखिन–हम आहाँ सँ प्रसन्न छी बड़ माँगू। संत्राजित कहलखिन–''अपने यदि हमरा पर प्रसन्न छी तऽ आहाँ स्वयं जे धारण केने छी स्यमन्तक मणि से हमरा दए दिय। सूर्य तत्क्षणे अपन गरा सँ ओ मणि उतारि हुनका दए देल आ कहलनि–''ई दिव्य मणि नित दिन आठ भार सोन देत तैं एकरा पूर्ण पवित्रता सँ धारण करब।''

ई कहि ओ जे तेजक पुञ्ज सूर्य भगवान से अन्तर्ध्यान भऽ गेलाह। संत्राजित ओहि रत्नके अपना गरामे धारण कएने अत्यन्त प्रकाशमान भेल द्वारिकामे प्रवेश कएल। रत्नसँ चमकैत देखि लोकक मनमे संदेह भेल जे शायद सूर्य कृष्णक भेंट करय आबि रहल छथि। नगरवासीक जिज्ञासा पर कृष्ण कहलनि–''ई सूर्य नहि संत्राजित छथि जे सूर्य सँ स्यमन्तक मणि प्राप्त कए घर घुरि रहलाह अछि।'' एम्हर संत्राजित के संदेह होमय लागल जे कदाचित ई मणि कृष्ण माँगि ने लेथि तैं ओ रत्न प्रसेनके दए देल जे एकरा अहाँ पवित्रता सँ धारण करू।

एक दिन प्रसेन ओहि मणिकेँ पहिरि कृष्णक संग शिकार करक हेतु घोड़ा पर चढ़ि जंगल गेलाह। घोड़ा पर चढ़ला सँ प्रसेन अपवित्र भए गेलाह तैं सिंह हुनका मारि देलक। जखन सिंह प्रसेन

के मारि रत्न लऽ विदा भेल । तहन जाम्बवान नामक जे भालु से सिंह के मारि मणि लए लेलक । घर जाए ओ मणि अपन बालक के खेलौनाक रुपमे दए देलनि ।

एम्हर शिकार सँ थाकि कृष्ण अपन नगर जहन घुमि कए एलाह त' लोक किछु दिनक बाद कहए लागल जे पापी कृष्ण रत्नक लोभमे अपन मित्रके मारि देलनि । ई बात जहन कृष्णक कानमे पड़ल त' बड़ दुखी भेलाह । एक दिन ओ अनेको पुरवासीके संग लए प्रसेनक खोजमे जंगल गेलाह। ओतए ओ देखलनि जे प्रसेन आ सिंह दुनू मारल परल अछि । आब कृष्णक मोनमे संदेह नहि रहल जे प्रसेनके सिंह मारलक आ सिंहके जाम्बवान मारलक । तैं हेतु ओ भालुक खोहमे ताकए लेल गेलाह । भालुक खोहमे तकैत अपन तेजक प्रकाश सँ सैकड़ो योजन आगू बढ़ला पर एकटा दिव्य महलमे झुला पर झुलैत जाम्बवानक पुत्र सुकुमारक झुलामे लटकैत दिव्य मणिकँ देखल । कृष्ण ओहि बच्चाकँ खेलबैत धाईक मुह सँ सुनल–''हे सुकुमार ! आहाँ नहि कानू । सिंह प्रसेनके मारलनि आ जाम्बवान सिंह के ई आब मणिं आहाँक थिक ता कृष्णक ध्यान झूला झुलबैत जाम्बवानक सुन्दर युवती कान्या पर पड़ल ता जाम्बवतियोक नजरि कृष्ण पर पड़ल । ओ कामोन्मत्त भऽ गेलीह ओ कृष्णके कहलनि जे एखन हमर पिता सूतल छथि एखने आहाँ मणि लय भागि जाउ।

प्रतापशाली कृष्ण ई मधुर वचन सुनि शंख बजाओल । शंखक आवाज सुनि जाम्बवानक नीन्द टुटि गेल । ओ कृष्णक संग भयंकर युद्ध कएल । ई युद्ध सात दिन धरि चलैत रहल । ता द्वारकावासी

लोकनि जे गुफाक बाहर प्रतीक्षा करैत छलाह से सोचलनि जे सायद कृष्ण मारल गेलाह । ओ सब द्वारिका घुमि हुनक प्रेत क्रिया कएल । एम्हर कृष्ण एकैस दिन धरि खाली हाथ जाम्बवानक संग लड़ैत रहलाह । हुनक युद्धक चमत्कार देखि जाम्बवानके ई भान भए गेलनि जे ई मनुष्य नहि साक्षात परमेश्वर थिकाह । ओ अपन भाग्यके सराहल आ बजलाह जे अपने साक्षात परमेश्वर थिकहुँ । हम अहाँसँ पराजित भेलहुँ से कहि हुनक स्तुति कए अपन-पुत्रीक संग विवाह करा खुशी-खुशी मणि विदाइमे दए विदा कएलनि ।

श्रीकृष्ण जाम्बवती संग द्वारिका आबि सब समाचार सँ नगरवासीके अवगत कराओल । एक गोट सभा कऽ ओ संत्राजितके मणि सौंपि देलनि । एहि तरहें मिथ्या दोष लगबाक कारण संत्राजित सर्वगुणी कन्या सँ कृष्ण कँ विवाह करा स्यमन्तक मणि दए देल । तहन कृष्ण कहलखिन जे ई वस्तु हमर भेल किन्तु आहाँक ई परम-प्रिय अछि अस्तु अहींक घरमे रहओ ।

एक समयमे कृष्ण आ बलराम कतहु गेल छलाह तऽ पापबुद्धि शतधन्वा संत्राजितके मारि मणि लए भागल जाइत छल । सत्यभामा ई बात कृष्णके कहलनि । तखन कृष्ण अपन ज्येष्ठ भाई बलदेव के कहल–"हे भाई संत्राजितके मारि दुष्ट शतधन्वा मणि लए पड़ाएल जा रहल अछि । ई रत्न निश्चिते हमर भोग्य थिक ।"

ओम्हर शतधन्वा मणि लऽ कृष्णक भय सँ अंकुर नामक यादवकँ मणि दय घोड़ा पर चढ़ि

दक्षिण दिस भागि गेल । तखन बलराम आ कृष्ण ओकरा रथ पर चढ़ि खिहारय लगलाह । सय योजन गेलोपरान्त शतधन्वाक घोड़ी मरि गेल तकर बाद ओ पैदले भागय लागल तहन श्रीकृष्ण बलरामके रथ पर छोरि पैदले खिहारि कए ओकरा मारि देल । लेकिन ओहिठाम हुनका रत्न नहि भेटलनि । ई सुनि बलराम क्रोधे आन्हर भए कहलनि आहाँ सदाके कपटी आ पापा छी । कृष्णक बहुत बुझेला पर ओ कहलनि धिक्कार एहि कष्ट के अछि । ओ रुसि विदर्भ देश चल गेलाह । एम्हर कृष्ण घुमि द्वारिका एलाह । नगरवासी सभ एकाएकी बाजए लागल जे रत्नक लोभे कृष्ण अपन भाइयोके खिहारि कऽ विदा केलनि । नगरवासी सभ एकाएकी बाजए लागल जे रत्नक लोभे कृष्णक अपन भाइयोके खिहारि कऽ विदा कएलनि ।

एहि तरहे स्वयं जगतपिताके मिथ्या कलंक लागल आ ओ दुःखी भेलाह । तीर्थयात्राक बहाना बना अंकूर द्वारिका छोरि देलक आ काशीमे पवित्रपूर्वक सूर्यक मणि धारण कए विश्वनाथक आराधना करए लागल । कृष्ण ई सब जनैत अपना पर मिथ्या कलंकक कारण दुःखी रहए लगलाह।

एहि समयमे हुनका समक्ष नारद पहुँचलाह ओ कृष्णके उदासीक कारण पुछल । श्रीकृष्ण हुनका बारम्बार मिथ्या कलंक लगबाक विषयमे कहलनि आ अनुनय कयल जे कोना एहि सँ उद्धार होयत से कहू । नारद कहल–"हम एकर कारण जनैत छी । आहाँ भाद्र शुक्ल चौठमे चन्द्रमाक दर्शन कएल तैं ई कलंक लागल ।" ताहि पर कृष्ण जिज्ञासा कएलनि–"जे भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्रक दर्शनक

कि दोष छैक से कहू ।" नारद बजलाह–"जे रुप गर्विता चन्द्रमाके गणपतिक श्राप छनि । जे चौठ तिथिमे हुनक दर्शन करत तकरा मिथ्या कलंक लगतैक । "तखन कृष्ण ज्ञापक कारण जिज्ञासा कएलनि । तहन नारद कहए लगलाह–प्राचीन कालमे ब्रह्मा; विष्णु, महेश अपन सृष्टिक कल्याण हेतु गणेशजीक अष्टसिद्धि पूजा कएलनि । हुनका धन-रत्न दए स्तुति कएलनि । ब्रह्मा कहलनि अहींक कृपा सँ विष्णु पृथ्वीक पालन करैत छथि आ शिवजी संहार करैत छथि । तैं हे हस्तमुख विद्याक अधिष्ठाता गणेशजी हमरा सभके वरदान दिए । एहि पर गणेशजी प्रसन्न भए हुनका लोकनिके कहलनि जे आहाँ लोकनि मनोनुकूल वर मँगैत जाउ । ब्रह्मा कहलनि जे हमर कैल सृष्टि निर्विघ्न हो । गणेशजी हाथमे लड्डू लेने प्रसन्न मुद्रामे बजलाह जे एहन हैत । एहि तरहें पूजा सम्पन्न भेला पर गणेशजी प्रसन्न मुद्रामे आकाश मार्ग सँ जा रहल छलाह तहन हुनकर दृष्टि चन्द्रमाक अद्वितीय रुप पर पड़ल । चन्द्रमो हुनका देखलनि, गणेशजीक रुप देखि हुनका हँसी लागि गेलनि । एहि पर गणेशजीके क्रोध भेलनि आ ओ हुनका श्राप देलनि । आहाँ अत्यन्त घमंडी छी । आहाँके अपन रुप पर बड़ घमंड अछि । अहाँके जल्दीये एकर फल भेटत ।

आई सँ आहाँके कियो नहि देखत । यदि गलतियो सँ कियो देखि लेत तकर मिथ्या कलंक लगतैक । ई श्राप सुनि चन्द्रमा हतप्रभ भए गेलाह संगहि हुनक प्रकाश क्षीण होमए लागल । अत्यन्त मलिन मुख सँ चन्द्रमा जलमे प्रवेश कऽ गेलाह । कुमदिनी नाथ कुमदिनीमे घर बना निवास करए

लगलाह । तखन देवता, ऋषि, गन्धर्व लोकनि इन्द्रके आगाँ कऽ ब्रह्माक ओतए पहुँचलाह । ब्रह्मा सोचि-विचारि कऽ कहलनि–चन्द्रमा गणेशजी सऽ अभिशप्त छथि तैं आहाँ लोकनि हुनके ओहिठाम जाउ । ताहि पर देवतागण जिज्ञासा केलनि जे कोना प्रसन्न हेताह से उपाय कहल जाय । तखन ब्रह्मा हुनका लोकनिके ई कहि विदा केलनि जे भाद्र शुक्ल चतुर्थी तिथिकँ लड्डू आ उत्तम-उत्तम पकवान सँ युक्त भऽ पूजा करथि तऽ प्रसन्न हेथिन्ह । तखन देवता लोकनिक आग्रह पर ब्रह्मा चन्द्रमा के सब विधान सविस्तार बुझा देलनि ।

चन्द्रमा ब्रह्माक बुझाओल विधि-विधानसँ गणेशजीक पूजा कएलनि तहन गणेशजी संतुष्ट भेलखिन आ प्रकट भेलखिन । तखन चन्द्रमा हुनका रंग-विरंगक स्तुति कए गणेशजी के प्रसन्न केलनि । तहन गणेशजी वर माँगय कहलखिन । ताहि पर चन्द्रमा कहलनि जे हमरा एहन वर दिय जे हम श्राप मुक्त भए जाइ । हमरा लोक पूर्ववत देखए । तखन गणेशजी हुनका वर देलनि जे आहाँके पाप आ श्राप सँ मुक्त करैत छी । किन्तु जे आहाँके भादव मासक शुक्लपक्षक चौठमे देखत तकरा मिथ्या कलंक लगतैक । जे मासक प्रारम्भे सँ आहाँके देखैत रहत तकरा कलंक नहि लगतैक तकर बाद भाद्र शूक्ल चतुर्थी कऽ विधिपूर्वक पूजा कऽ हाथमे फल-फूल लऽ दर्शन करत तकरा कलंक नहि लगतैक । एतबे नहि हमर बनाओल विधि सँ जे चन्द्रमाके दर्शन करत, तकरा मनवांछित फल भटतै । एहि तरहें नारद कृष्णके मिथ्या कलंकक कारण आ मुक्तिक उपाय कहि संतुष्ट कएल।

कथा सुनय काल जे हाथमे फूल रहय तकरा निम्न मन्त्र पढ़ैत अर्पन करी–

रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवान देहिमे ।
धर्मान देहि, धनं देहि सर्वानकामान प्रदेहिमे ॥

कथाक बाद विसर्जन

तदुपरांत हाथमे जल लऽ–नमो गणपत्यादि पंचदेवता पूजितोसि प्रसीद क्षमस्वस्वस्थानं गच्छ । नामे भगवन् विष्णो ! पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानँ गच्छ । नमः रोहिणी सहित भाद्रशुक्ल चतुर्थी चन्द्र पूजितोसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ । नमः ब्रह्मण पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ ।

दक्षिणा–नमो अस्यां रात्रौ कृतैतत रोहिणी सहित भाद्र शुक्ल चतुर्थी चन्द्र पूजन तत्कथा श्रवण प्रतिष्ठार्थं एतावत् द्रव्यमूल्यक हिरेण्यमग्नि देवता यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहंददे । तखन प्रतिपन्न-स्वच्छन्न कऽ उत्सर्ग कएल जे पायस (मरड़) तकरा ग्राम व्यवहारानुसार बीचो-बीच दू भाग कऽ तहने प्रसाद वितरण करी ।

उर्वशी प्रकाशनक

किछु प्रकाशित पुस्तकक सूची

१ वर्षकृत्य (दुनूभाग एकसंग)
२ मिथिलाक व्रत आ पावनि-तिहार
३ मैथिली संस्कार गीत
४ मधुश्रावणी व्रत कथा
५ विद्यापति गीत
६ विद्यापति पदावली
७ शाक्त साहित्य (भगवती गीत)
८ कथा कहिनी (कथा संग्रह)
६ गोनू झा (कथा संग्रह)
१० शिव आराधना
११ सुमति (मैथली उपन्यास)
१२ रामेश्वर (मैथली उपन्यास)
१३ दुर्गा सप्तशती (मै० स०)
१४ सत्यनारायण पूजा
१५ सदाचार (बाजसनेयि)
१६ सदाचार (छन्दोग)
१७ वाजसनेयि विवाह पद्धति
१८ सुगम विवाह (शुद्द विवाह)
१६ सरस्वती पूजा पद्धति
२० लक्ष्मी पूजा पद्धति
२१ चित्रगुप्त पूजा पद्धति
२२ वटसावित्री पूजा पद्धति
२३ चौठचंद्र पूजा पद्धति
२४ जिमूतवाहन पूजा पद्धति
२५ छठि व्रत कथा
२६ पितृ तर्पण